नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नमः

On Line – आगममंजूषा

[२५] आउरपच्चक्खाणं

* संकलन एवं प्रस्तुतकर्ता *

मुनि दीपरत्नसागर [M.Com., M.Ed., Ph.D.]

||किंचित् प्रास्ताविकम्||

ये आगम-मंजूषा का संपादन आजसे ७० वर्ष पूर्व अर्थात् वीर संवत २४६८, विक्रम संवत-१९९८, ई.स.1942 के दौरान हुआ था, जिनका संपादन पूज्य आगमोद्धारक आचार्यश्री आनंदसागरसूरिजी म.सा.ने किया था| आज तक उन्ही के प्रस्थापित-मार्ग की रोशनी में सब अपनी-अपनी दिशाएँ ढूंढते आगे बढ़ रहे हैं|

हम ७० साल के बाद आज ई.स.-2012,विक्रम संवत-२०६८,वीर संवत-२५३८ में वो ही आगम-मंजूषा को कुछ उपयोगी परिवर्तनों के साथ इंटरनेट के माध्यम से सर्वथा सर्वप्रथम “ OnLine-**आगममंजूषा** ” नाम से प्रस्तुत कर रहे हैं|

* मूल आगम-मंजूषा के संपादन की किंचित् भिन्नता का स्वीकार *

[१]आवश्यक सूत्र-(आगम-४०) में केवल मूल सूत्र नहीं है, मूल सूत्रों के साथ निर्युक्ति भी सामिल की गई है|

[२]जीतकल्प सूत्र-(आगम-३८) में भी केवल मूल सूत्र नहीं है, मूलसूत्रों के साथ भाष्य भी सामिल किया है|

[३]जीतकल्प सूत्र-(आगम-३८) का वैकल्पिक सूत्र जो “पंचकल्प” है, उनके भाष्य को यहाँ सामिल किया गया है|

[४] “ओघनिर्युक्ति”-(आगम-४१) के वैकल्पिक आगम “पिंडनिर्युक्ति” को यहाँ समाविष्ट तो किया है, लेकिन उनका मुद्रण-स्थान बदल गया है|

[५] “कल्प(बारसा)सूत्र” को भी मूल आगममंजूषा में सामिल किया गया है| -मुनि दीपरत्नसागर

: Address:-

Mnui Deepratnasagar,
MangalDeep society, Opp.DholeshwarMandir,
POST:- THANGADH Dist.surendranagar.
Mobile:-9825967397 jainmunideepratnasagar@gmail.com

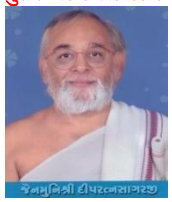

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वोसिरे ॥२॥ ममत्तं परिवज्जामि, निम्ममत्तं उवट्ठिओ। आलंबणं च मे आया, अवसेसं च वोसिरे ॥३॥ आया हु महं नाणे आया मे दंसणे चरित्ते य। आया पच्चक्खाणे आया मे संजमे जोगे ॥४॥ एगो वच्चइ जीवो, एगो चेवुववज्जई। एगस्स चेव मरणं, एगो सिज्झइ नीरओ ॥५॥ एगो मे सासओ अप्पा, नाणदंसणसंजुओ। सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोगलक्खणा ॥६॥ संजोगमूला जीवेणं, पत्ता दुक्खपरंपरा। तम्हा संजोगसंबंधं, सव्वभावेण (प्र० सव्वं तिविहेण) वोसिरे ॥७॥ मूलगुणे उत्तरगुणे जे मे नाराहिया पमाएणं। तमहं सव्वं निंदे पडिक्कमे आगमिस्साणं ॥८॥ सत्त भए अट्ठ मए सन्ना चत्तारि गारवे तिन्नि। आसायण तेत्तीसं रागं दोसं च गरिहामि ॥९॥ अस्संजममन्नाणं मिच्छत्तं सव्वमेव य ममत्तं। जीवेसु अजीवेसु य,तं निंदे तं च गरिहामि ॥३०॥ निंदामि निंदणिज्जं गरिहामि य जं च मे गरहणिज्जं। आलोएमि य सव्वं सब्भितरबाहिरं उवहिं ॥१॥ जह बालो जंपंतो कज्जमकज्जं च उज्जुयं भणइ। तं तह आलोइज्जा मायामोसं पमुत्तूणं (प्र० मायामयविप्पमुक्को अ) ॥२॥ नाणंमि दंसणंमि य तवे चरित्ते य चउसुवि अकंपो। धीरो आगमकुसलो अपरिस्सावी रहस्साणं ॥३॥ रागेण व दोसेण व जं मे अकयन्नुया पमाएणं। जो मे किंचिवि भणिओ तमहं तिविहेण खामेमि ॥४॥ तिविहं भणंति मरणं बालाणं बालपंडियाणं च। तइयं पंडितमरणं जं केवलिणो अणुमरंति ॥५॥ जे पुण अट्ठमईया पयलियसन्ना य बंकमावा य। असमाहिणा मरंति न हु ते आराहगा भणिया ॥६॥ मरणे विराहिए देवदुग्गई दुल्लहा य किर बोही। संसारो य अणंतो होइ पुणो आगमिस्साणं ॥७॥ का देवदुग्गई का अबोहि केणेव वुज्झई मरणं। केण अणंतमपारं संसारं हिंडई जीवो ॥८॥ कंदप्प देवकिब्बिस अभिओगा आसुरी य संमोहा। ता देववुग्गईओ मरणंमि विराहिए हुंति ॥९॥ मिच्छद्दंसणरत्ता सनियाणा कण्हलेसमोगाढा। इय जे मरंति जीवा तेसिं दुल्लहा भवे बोही ॥४०॥ सम्मद्दंसणरत्ता अनियाणा सुक्कलेसमोगाढा। इय जे मरंति जीवा तेसिं सुलहा भवे बोही ॥१॥ जे पुण गुरुपडिणीया बहुमोहा ससबला कुसीला य। असमाहिणा मरंति ते हुंति अणंतसंसारी ॥२॥ जिणवयणे अणुरत्ता गुरुवयणं जे करंति भावेणं। असबल असंकिलिट्ठा ते हुंति परित्तसंसारी ॥३॥ बालमरणाणि बहुसो बहुयाणि अकामगाणि मरणाणि। मरिहंति ते वराया जे जिणवयणं न याणंति ॥४॥ सत्थग्गहणं विसभक्खणं च जलणं च जलपवेसो य। अणयारभंडसेवी जम्मणमरणाणुबंधीणि ॥५॥ उड्ढमहे तिरियंमिवि मयाणि जीवेण बालमरणाणि। दंसणनाणसहगओ पंडिअमरणं अणुमरिस्सं ॥६॥ उव्वेयणयं जाई मरणं नरएसु वेयणाओ य। एयाणि संभरंतो पंडियमरणं मरसु इण्हिं ॥७॥ जइ उप्पज्जइ दुक्खं तो दट्ठव्वो सहावओ नवरं। किं किं मए न पत्तं संसारे संसरंतेणं? ॥८॥ संसारचक्कवालंमि सव्वेऽविय पुग्गला मए बहुसो। आहारिया य परिणामिया य नाहं गओ तित्तिं ॥९॥ तणकट्ठेहिव अग्गी लवणजलो वा नईसहस्सेहिं। न इमो जीवो सक्को तिप्पेउं कामभोगेहिं ॥५०॥ आहारनिमित्तेणं मच्छा गच्छंति सत्तमिं पुढवीं। सचित्तो आहारो न खमो मणसावि पत्थेउं ॥१॥ पुव्विं कयपरिकम्मो अनियाणो ऊहिऊण मइबुद्धी। पच्छा मलियकसाओ सज्जो मरणं पडिच्छामि ॥२॥ अकंडेऽचिरभाविय ते पुरिसा मरणदेसकालम्मि। पुव्वकयकम्मपरिभावणाए पच्छा परिवडंति ॥३॥ तम्हा चंदगविज्झं सकारणं उज्जुएण पुरिसेणं। जीवो अविरहियगुणो कायव्वो मुक्खमग्गंमि ॥४॥ बाहिरजोगविरहिओ अब्भितरनाणजोगमल्लीणो। जह तंमि देसकाले अमूढसन्नो चयइ देहं ॥५॥ हंतूण रागदोसं छित्तूण य अट्ठकम्मसंघायं। जम्मणमरणऽरहट्टं भित्तूण भवा विमुच्चिहिति ॥६॥ एयं सव्वुवएसं जिणदिट्ठं सद्दहामि तिविहेणं। तसथावरखेमकरं पारं निव्वाणमग्गस्स ॥७॥ न हु तम्मि देसकाले सक्को बारसविहो सुयक्खंधो। सव्वो अणुचिंतेउं धणियंपि समत्थचित्तेणं ॥८॥ एगंमिवि जम्मि पए संवेगं वीयरायमग्गंमि। गच्छइ नरो अभिक्खं तं मरणं तेण मरियव्वं ।९। ता एगंपि सिलेगं जो पुरिसो मरणदेसकालम्मि। आराहणोवउत्तो चिंतंतो राहगो होइ ॥६०॥ आराहणोवउत्तो कालं काऊण सुविहिओ सम्मं। उक्कोसं तिन्नि भवे गंतूणं लहइ निव्वाणं ॥१॥ समणोत्ति अहं पढमं बीयं सव्वत्थ संजओमित्ति। सव्वं च वोसिरामी एयं भणियं समासेणं ॥२॥ लद्धं अलद्धपुव्वं जिणवयण सुभासियं अमयभूयं। गहिओ सग्गइमग्गो नाहं मरणस्स बीहेमि ॥३॥ धीरेणवि मरियव्वं काउरिसेणवि अवस्स मरियव्वं। दुण्हंपि हु मरियव्वे वरं खु धीरत्तणे मरिउं ॥४॥ सीलेणवि मरियव्वं निस्सीलेणवि अवस्स मरियव्वं। दुण्हंपि हु मरियव्वे वरं खु सीलत्तणे मरिउं ॥५॥ नाणस्स दंसणस्स य सम्मत्तस्स य चरित्तजुत्तस्स। जो काही उवओगं संसारा सो विमुच्चिहिइ ॥६॥ चिरउसियबंभयारी पप्फोडेऊण सेसयं कम्मं। अणुपुव्वीइ विसुद्धो गच्छइ सिद्धिं धुयकिलेसो ॥७॥ निक्कसायस्स दंतस्स, सूरस्स ववसाइणो। संसारपरिभीयस्स, पच्चक्खाणं सुहं भवे ॥८॥ एयं पच्चक्खाणं जो काही मरणदेसकालम्मि। धीरो अमूढसन्नो सो गच्छइ सासयं ठाणं ॥९॥ धीरो जरमरणविऊ वीरो विन्नाणनाणसंपन्नो। लोगस्सुज्जोयगरो दिसउ खयं सव्वदुक्खाणं ॥७०॥१,१३३॥ इति